R1T5B1

9 ममता

–जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30-01-1889 में वाराणसी में हुआ। प्रसादजी मूलत: कवि हैं। उन्होंने नाटक, कहानियाँ, निबंध और उपन्यास भी लिखे। उनकी रचनाओं में मुख्य रूप से भारत की ऐतिहासिक संस्कृति की झलक मिलती है। उनके प्रमुख नाटक हैं – 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी'। 'कामायनी' उनका सुप्रसिद्ध महाकाव्य है। उनका निधन 14-01-1937 को हुआ।

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित इस कहानी की नायिका ममता है। ममता विधवा है। रोहतास दुर्ग के मंत्री चूड़ामणि अपनी इस एकमात्र स्नेहपालिता पुत्री के दु:ख से अत्यंत दु:खी है। वे उसका भविष्य सुरक्षित करने का प्रयास करते हैं, किंतु पिता द्वारा भिजवाए स्वर्ण उपहारों को ममता लौटा देती है। डोलियों में छिपकर बैठे पठान सैनिकों ने अगले ही दिन दुर्ग पर अधिकार कर लिया। चूड़ामणि वहीं मारे गए किंतु ममता वहाँ से सुरक्षित काशी के उत्तर में स्थित एक विहार में जा पहुँची और वहीं रहने लगी। लंबा समय बीत गया। अपनी झोंपड़ी में बैठी ममता दीप के आलोक में पाठ कर रही थी कि एक भीषण और हताश आकृति ने आश्रय माँगा। संकोचपूर्वक ममता ने अतिथि धर्म का पालन करते हुए उस पथिक को आश्रय दिया। वह पथिक कोई और नहीं, हुमायूँ था जिसने सुबह होने पर अपने एक सैनिक मिरज़ा को इस वृद्धा की टूटी झोंपड़ी बनवाने का आदेश दिया। ममता अब सत्तर वर्ष की हो चली थी। अचानक उसे एक अश्वारोही की आवाज़ सुनाई दी जो उसीकी झोंपड़ी के बारे में पता पूछ रहा था। ममता उस मुगल अश्वारोही को वह स्थान सौंपकर अनंत यात्रा पर चली गई, उस स्थान पर एक आकर्षक मंदिर बना जिसके शिलालेख पर सातों देश के नरेश हुमायूँ और उसके पुत्र अकबर का नाम तो था किंतु ममता का कहीं ज़िक्र तक न था।

रोहतासदुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता शोण, के तीक्ष्ण गंभीर प्रवाह को देख रही थी, मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए वह विकल थी। वह रोहतास दुर्ग के मंत्री चूड़ामणि की एकमात्र दुहिता थी। उसके लिए कोई अभाव होना असंभव था परंतु वह विधवा थी; उसकी विडंबना का अंत कहाँ था!

चूड़ामणि ने चुपचाप उस प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। शोण के प्रवाह और उसके कलनाद में ममता अपना जीवन मिलाने में बेसुध थी। पिता का आना न जान सकी। चूड़ामणि व्यथित हो उठे। स्नेहपालिता पुत्री के लिए क्या करें, यह स्थिर न कर सकते थे। लौटकर बाहर चले गए। ऐसा प्रायः होता, परंतु आज मंत्री के मन में बड़ी दुश्चिंता थी। पैर सीधे न पड़ते थे।

एक पहर बीत जाने पर वे फिर ममता के पास आए। उस समय उनके पीछे दस सेवक चाँदी के बड़े थालों में कुछ लिए खड़े थे। कितने ही मनुष्यों के पद-शब्द सुन ममता ने घूमकर देखा। मंत्री ने सब थालों को रखने का संकेत दिया । अनुचर थाल रखकर चले गए।

ममता ने पूछा – ''यह क्या है पिताजी ?''

''तेरे लिए बेटी ! उपहार है! कहकर चूड़ामणि ने आवरण उलट दिया।''

स्वर्ण का पीलापन उस सुनहरी संध्या में विकीर्ण होने लगा। ममता चौंक उठी, ''इतना स्वर्ण ! यह कहाँ से आया ?''

''चुप रहो ममता... यह तुम्हारे लिए है !''

''तो क्या आपने शत्रु का उत्कोच स्वीकार कर लिया ? पिताजी, यह अनर्थ है, अर्थ नहीं!''

''लौटा दीजिए, पिताजी ! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे ?''

''इस पतनोन्मुख प्राचीन सामंत वंश का अंत समीप है बेटी ! किसी भी दिन शेरशाह रोहतास दुर्ग पर अधिकार कर सकता है। उस दिन मंत्रित्व न रहेगा... तब के लिए बेटी !''

''हे भगवान ! विपद के लिए इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी क्या भीख न मिलेगी ? क्या कोई हमें दो मुट्ठी अन्न न देगा ? यह असंभव है। फेर दीजिए पिताजी, मैं काँप रही हूँ ? इसकी चमक आँखों को अंधा बना रही है।''

''मूर्ख है ! कहकर चूड़ामणि चले गए।''

दूसरे दिन जब डोलियों का ताँता आ रहा था, मंत्री चूड़ामणि का हृदय धक-धक करने लगा। वे अपने को रोक न सके। उन्होंने जाकर रोहतास दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा। पठानों ने कहा, ''यह महिलाओं का अपमान करना है।''

बात बढ़ गई। तलवारें खिंचीं, मंत्री वहीं मारे गए। राजा-रानी और कोष सब छली शेरशाह के हाथ पड़े; निकल गई ममता। डोली में भरे हुए पठान सैनिक दुर्गभर में फैल गए परंतु ममता न मिली।

काशी के उत्तर में स्थित धर्मचक्र विहार, मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खंडहर था। खंडित शिखरोंवाले भवन तृण-गुल्मों से ढके हुए प्राचीन और ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म की चंद्रिका में स्वयं को शीतल कर रही थी।

जहाँ गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पंचवर्गीय भिक्षु पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोंपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी।

''अनन्याश्विन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते...''

पाठ रुक गया। एक भीषण और हताश आकृति दीपक के मंद प्रकाश में सामने खड़ी थी। स्त्री उठी, उसने कपाट बंद करना चाहा। परंतु उस व्यक्ति ने कहा, ''माता! मुझे आश्रय चाहिए।''

''तुम कौन हो ?!'' स्त्री ने पूछा।

''मैं मुगल हूँ। चौसा-युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ। इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ। ''

''क्या शेरशाह से ?'' स्त्री ने अपने होठ काट लिए।

''हाँ, माता !''

''परंतु तुम भी वैसे ही क्रूर हो, वही भीषण रक्त की प्यास, वही निष्ठुर प्रतिबिंब तुम्हारे मुख पर भी है सैनिक ! मेरी कुटी में स्थान नहीं। जाओ, कहीं दूसरा आश्रय खोज लो !''

''गला सूख रहा है, साथी छूट गये हैं, अश्व गिर गए हैं, इतना थका हुआ हूँ... इतना...'' कहते-कहते वह व्यक्ति धम्म से बैठ गया। उसके सामने पूरा ब्रह्मांड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, यह विपत्ति कहाँ से आई ! उसने जल

दिया, मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी कि ये सब दया के पात्र नहीं... मेरे पिता का वध करनेवाले आततायी ! घृणा से उसका मन विरक्त हो गया।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा, ''माता ! तो फिर मैं यहाँ से चला जाऊँ ?''

स्त्री विचार कर रही थी, 'मैं ब्राह्मणी हूँ। मुझे तो अपना धर्म 'अतिथिदेव के सत्कार' का. पालन करना चाहिए । परंतु यहाँ नही नहीं. ये सब दया के पात्र नहीं। परंतु यह दया तो नहीं... कर्तव्य करना है। तब? मुगल अपनी तलवार टेककर उठ खड़ा हुआ। ममता ने कहा, ''क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल न करो; ठहरो !''

''छल ! नहीं, तब नहीं स्त्री ! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा? जाता हूँ, भाग्य का खेल है।''

ममता ने कहा, ''यहाँ कौन दुर्ग है ! यही झोंपडी न, जो चाहे ले लो, मुझे तो अपना कर्तव्य निभाना पड़ेगा। जाओ भीतर, थके हुए पथिक ! तुम चाहे कोई भी हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ।'' सब अपना धर्म छोड़ दे तो क्या मैं भी छोड़ दूँ।'' मुगल ने चन्द्रमा के मंद प्रकाश में वह महिमामय मुखमंडल देखा, उसने मन-ही-मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवारों में चली गई। भीतर, थके पथिक ने झोंपड़ी में विश्राम किया।

प्रभात में खँड़हर की संधि से ममता ने देखा, सैकड़ों अश्वारोही उस प्रांत में घूम रहे हैं। वह अपनी मूर्खता पर स्वयं को कोसने लगी।

एकाएक झोंपड़ी से निकलकर उस पथिक ने कहा, ''मिरज़ा, मैं यहाँ हूँ !''

शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार-ध्वनि से वह प्रांत गूँज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई, पथिक ने कहा, ''वह स्त्री कहाँ हैं? उसे खोज निकालो ! ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई, वह मृग-दाव में चली गई। दिनभर उसमें से न निकली। संध्या हो गई, वे लोग जाने लगे। ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा था, ''मिरज़ा, उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका, उसका घर बनवा देना क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया या। यह स्थान भूलना मत।'' इसके बाद वे वहाँ से चले गए।

❄ ❄ ❄

''चौसा के मुगल-पठान युद्ध को बहुत दिन बीत गए। ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है। एक दिन वह अपनी झोंपड़ी में पड़ी थी। शीतकाल का प्रभाव था। उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूँज रहा था। ममता की सेवा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ घेरकर बैठी थीं, क्योंकि ममता आजीवन सबके सुख-दुःख की सहभागिनी रही थी।

ममता ने जल पीना चाहा, एक स्त्री ने सीपी से जल पिलाया। सहसा एक अश्वारोही उसी झोंपड़ी के द्वार पर दिखाई पड़ा । वह अपनी धुन में कहने लगा।'' मिरज़ा ने जो चित्र बनाकर दिया है, वह तो इसी जगह का होना चाहिए। वह बुढ़िया मर गई होगी, अब किससे पूछूँ कि एक दिन शहंशाह हुमायूँ किस छप्पर के नीचे बैठे थे? यह घटना भी तो सैंतालीस वर्ष से ऊपर की हुई।''

ममता ने अपने विकल कानों से सुना। उसने पास की स्त्री से कहा, ''उसे बुलाओ !''

अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुककर कहा, ''मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल, पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था! भगवान ने सुन लिया, आज मैं इसे छोड़े जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर विश्रामगृह में जाती हूँ।''

बुढ़िया के प्राण-पखेरू उड़ गए। वह अश्वारोही अवाक् खड़ा रह गया।

वहाँ एक अष्टकोण मंदिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया -

''सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह विशाल गगनचुंबी मंदिर बनवाया।'' पर उसमें ममता का कहीं नाम न था।

शब्दार्थ

प्रकोष्ठ भवन के फाटक के पास का कमरा **तृण-गुल्म** घास का समूह, झाड़ी **तीक्ष्ण** तेज़ **प्रवाह** बहाव **वेदना** पीड़ा, दु:ख **विकल** बैचेन **व्यथित** पीड़ित **दुहिता** पुत्री, कन्या **विकीर्ण होना** फैल जाना **उत्कोच** घूस-रिश्वत **प्राचीर** चारदीवारी **विभूति** समृद्धि, प्रभुता **विपन्न** संकटग्रस्त **आततायी** अन्यायी दूसरों को त्रास देनेवाला **विरक्त** खिन्न, दु:खी **मृग-दाव** शिकारियों के भय से मृगों के छिपने का वह वन जिसमें पर्याप्त मृग हो **जीर्ण** वृद्ध, जर्जर, टूटा-फूटा

अभ्यास

1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) प्रसादजी ने ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति किसे कहा ?

(2) शहंशाह हुमायूँ के आदेश का किस प्रकार पालन हुआ ? वह सही था या गलत ? अपने विचारों में स्पष्ट कीजिए।

(3) कहानी के आधार पर मुख्य पात्र ममता के बारे में कहिए।

(4) कहानी के अंतिम वाक्य को हटाकर कहानी का अंत अपने अनुसार कहिए।

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) ममता को प्रत्येक लड़नेवाले सैनिक से नफरत क्यों थी ?

(2) ममता की झोंपड़ी में आश्रय माँगने कौन आया?

(3) अकबर ने अष्टकोण मंदिर कब और कहाँ बनवाया ?

(4) घोड़े पर सवार होते हुए पथिक ने मिरज़ा से क्या कहा?

(5) किस बात से पता चलता है कि ममता सबके सुख-दुःख की सहभागिनी थी ?

2. नीचे दिए गए वाक्यों को निर्देश के अनुसार भिन्न-भिन्न कालों में परिवर्तन कीजिए :

(1) तेनालीरामन के बारे में अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं। (भूतकाल)

(2) सुबह होने पर हिना अपने बेटे को साथ लेकर उद्यान में गई। (भविष्यकाल)

(3) प्रिया का गृहकार्य जल्दी समाप्त हो गया। (भविष्यकाल)

(4) हर्ष आज उपवास करेगा। (भूतकाल)

(5) मनोज अक्सर जागता रहता था। (वर्तमानकाल)

3. शब्दों के अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) दुहिता (2) वेदना (3) उत्कोच (4) जीर्ण (5) आततायी

4. नीचे लिखी कहानी एकवचन में है। इसे बहुवचन में लिखकर उच्च स्वर में पढ़िए :

एक चिड़िया पेड़ पर रहती थी। उसका घोंसला जंगल के पास था। घोंसले में उसके तीन बच्चे थे। वह अपने बच्चों के साथ रहती थी। एक दिन एक शिकारी वहाँ आया। वह चिड़िया को मारना चाहता था। चिड़िया ने बच्चों को घोंसले में सिर नीचा कर बैठने को कहा। वह खुद वहाँ से उड़ गई और पत्तों में छिपकर बैठ गई, शिकारी चिड़िया को न देख वहाँ से चला गया।

उदाः **अनेक चिड़ियाँ पेड़ों पर रहती थीं।** ______________________________

5. **नीचे शरीर के कुछ अंगों के चित्र दिए गए हैं। प्रत्येक अंग से संबंधित तीन-तीन मुहावरे अर्थ सहित लिखकर वाक्य में प्रयोग करें :**

	मुहावरा	अर्थ	वाक्य प्रयोग
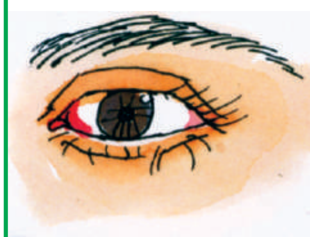	...आँखों का तारा. होना...	...बहुत प्यारा...	मेरा बेटा मेरी आँखों का तारा है ।

6. **रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए :**

एक निर्दयी राजा - गुलाम को दंड - गुलाम का जंगल में भाग जाना - सिंह से भेंट - सिंह के पैर से काँटा निकालना - सिंह से मित्रता - गुलाम की गिरफ्तारी - फाँसी की तैयारी - उसे भूखे सिंह के सामने छोड़ना - सिंह का स्नेहपूर्ण व्यवहार - दोनों की रिहाई - सीख।

7. चित्र के आधार पर कहानी लिखिए :

8. नीचे दिए गए शब्दों में से संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण पहचान कर वर्गीकृत कीजिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(हिमालय, मुझे, खट्टा, तुम्हें, बड़ौदा, सपना, साबरमती, सुंदर, छोटा, होशियार, हमारा, गुजरात)

योग्यता-विस्तार

- "जयशंकर प्रसादजी" की कहानियाँ पढ़िए।
- कहानियों का संकलन कीजिए।
- कहानियों को बुलेटिन बोर्ड (भीतिपत्र) पर रखिए।